कम्युनिटी रिपोर्टर

सखी मंडल की दीदियों की फर्श से अर्श की कहानी

कलस्टर संगठन समारोह का आयोजन

शबनम खातुन
प्रखंड : बरवाडीह
जिला : लातेहार

लातेहार जिले के बेतला पंचायत भवन में कलस्टर संगठन समारोह का आयोजन हुआ. इस मौके पर उपस्थित छह दीदियों ने अपनी सफलता की कहानी सुनायी. कहा, किस तरह पहले और अब में उनके जीवन में परिवर्तन आया. और, इसके लिए सारा श्रेय झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी के सहयोग को दिया. समारोह में उपस्थित दीदियों ने 10 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर की चर्चा की. दीदियों ने कहा कि इस 10 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में सखी मंडल की सदस्यों ने खाना बना कर लायी. कलस्टर संगठन में 20 महिला ग्राम संगठन से जुड़ी. हर ग्राम संगठन के सफल आयोजन से एक दिन पहले महिलाओं के बीच साड़ी वितरण किया गया. यह साड़ी हर ग्राम संगठन के तीन महिला प्रतिनिधियों को दिया गया. इस तरह 20 ग्राम संगठन के 60 महिला प्रतिनिधियों के बीच साड़ी का वितरण हुआ. दीदियों ने कहा कि कलस्टर संगठन का

समारोह में उपस्थित सखी मंडल की सदस्य.

अपना भवन नहीं होने के कारण किराये के मकान में चल रहा है, जिसका किराया तीन हजार रुपये प्रति माह देना पड़ रहा है. इस मौके पर बीपीएम प्रवीण कुमार ने जेएसएलपीएस के माध्यम से जल्द ही कलस्टर संगठन का भवन बनाने की बातें कही. बातें सुन उपस्थित दीदियों के चेहरे खुशी से खिल उठे. समारोह को संबोधित करते हुए हरे कृष्ण सिंह ने ग्रामीणों को मूलभूत सुविधाओं की ओर ध्यान आकृष्ट कराया. उन्होंने कहा कि जिन गांवों में पेयजल की समस्या है, उन गांवों में जल्द ही चापानल लगाया जायेगा. इसके अलावा जिन गांवों में बिजली की समस्या विद्यमान है, उन गांवों में जल्द बिजली उपलब्ध करा दी जायेगी. इस समारोह में अमरनाथ, राजीव, एलिए एक्का, बीनी पंचायत के मुखिया नसीम अंसारी, असलम अंसारी, पंजाब नेशनल बैंक के अधिकारी, सीसी ममता कुमारी, रेणु देवी, निर्मल कुमार, विकास कुमार समेत करीब 500 की संख्या में दीदियों ने शिरकत की. ❑

बिसनी की बदली जिंदगी

बेबी मुर्मू
गांव : गोविंदपुर
जिला : पाकुड़

पाकुड़ जिले के चांचकी कलस्टर की बिसनी देवी आरती आजीविका सखी मंडल से जुडीं हैं. समूह से जुड़ने से पहले बिसनी देवी की आर्थिक स्थिति काफी खराब थी. पति का भी कोई खास रोजगार नहीं था. बच्चों को पढ़ाने-लिखाने में भी काफी परेशानी हो रही थी. इसी बीच बिसनी देवी ने स्वयं सहायता समूह के बारे में सुना. आरती आजीविका सखी मंडल समूह से जुड़ कर समूह की गतिविधियों में शिरकत करने लगी, ताकि समूह की कार्यप्रणाली का अच्छी तरह से समझ सके. धीरे-धीरे बिसनी ने समूह से ऋण लेकर दुकान खोली. दुकान खोलने के बाद से बिसनी की आर्थिक स्थिति में काफी हद तक सुधार होने लगा.

बिसनी देवी कहती हैं कि समूह से जुड़ कर जहां मेरी जिंदगी में बदलाव आने लगा, वहीं दुकान खोलने का सपना भी पूरा हो गया. समूह से लिए गये ऋण को बिसनी धीरे-धीरे

अपनी दुकान चलाती समूह की बिसनी देवी.

चुकता भी कर रही है. और अपने बच्चों व परिवार का भरन-पोषण भी ठीक तरह से कर रही है. वर्तमान में बिसनी एक सफल उद्यमी के रूप में आगे बढ़ते हुए अन्य दीदियों के हौसला बढ़ाने में मददगार साबित हो रही है. ❑

स्टार्टअप से दीदियों को सहायता

रूबी खातुन
प्रखंड : अनगड़ा
जिला : रांची

नव उद्यमिता को बढ़ावा देते हुए अधिकतम रोजगार सृजन लक्ष्य की प्राप्ति के लिए स्टार्टअप इंडिया की शुरुआत हुई. इसी लक्ष्य को शत-प्रतिशत प्राप्त करने और गांव-गांव तक इसका लाभ दिलाने के उद्देश्य से स्टार्टअप ग्राम उद्यमिता कार्यक्रम को अमलीजामा पहनाया गया. झारखंड के गांवों में भी जेएसएलपीएस से जुड़ कर एसवीइपी यानी (startup village entrepreneurship programme- SVEP) गरीब परिवारों को आर्थिक सहायता व प्रशिक्षण देकर आत्मनिर्भर बनाने की कोशिश की जा रही है. एसवीइपी की ओर से अति गरीब व गरीब परिवारों की दीदियों को आर्थिक सहायता व प्रशिक्षण दे कर आजीविका के लिए प्रेरित व गरीबी दूर करने में मदद बन रही है. वैसे सखी मंडल की अन्य दीदियां, जो अब तक इस कार्यक्रम से नहीं जुड़ी हैं, उन्हें आजीविका के माध्यम से प्रशिक्षण लेना होगा. प्रशिक्षण के दौरान दीदियों को कई पहलुओं के बारे में बताया जायेगा, ताकि उन्हें इस प्रशिक्षण का लाभ मिल सके. अपने आजीविका के लिए ऋण संबंधी जानकारी भी विस्तार से दी जायेगी. साथ ही सलाना ब्याज की दरें और अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए एमइसी का भी सहयोग मिलेगा. सखी मंडल की दीदियों को

Startup Village
build. break. innovate

आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से महेशपुर आजीविका ग्राम संगठन में कार्यक्रम आयोजित हुआ. इस दौरान एसवीइपी से मिलनेवाले लाभ, कलस्टर से ग्राम संगठन और ग्राम संगठन से सखी मंडल तक मिलनेवाले सहयोग की विस्तार से जानकारी दी गयी. वर्तमान समय में गांव के लिए उद्यमिता कितना मायने रखता है, यह इसी बात से समझा जा सकता है कि महेशपुर आजीविका ग्राम संगठन के कार्यक्रम में उपस्थित सदस्यों ने अपने-अपने सखी मंडल की दीदियों को आजीविका के बारे में बताया, तो खुद को मजबूत करने के उद्देश्य से कई दीदियां सहर्ष तैयार हो गयी. इतना ही नहीं, अपनी-अपनी आजीविका शुरू करने संबंधी आर्थिक सहायता के लिए प्रस्ताव लिख कर ग्राम संगठन में जमा कराया गया. दीदियों के इन प्रस्तावों को ग्राम संगठन से कलस्टर तक वीओए के द्वार पहुंचाया गया. ❑

बेरोजगार को मिला रोजगार

नेहा कुमारी
गांव : खुरा
जिला : लातेहार

लातेहार जिले के बरवाडीह प्रखंड स्थित छेंदा गांव की बबली देवी की कहानी अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत है. बबली देवी, जब विवाह कर अपने ससुराल बरवाडीह के छेंदा गांव आयी, तो देखा कि ससुरालवालों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है. पहले से ही आर्थिक तंगी थी. पति मजदूरी करने गांव से बाहर जाते थे. बबली किसी तरह अपने पूरे परिवार का गुजर-बसर कर रही थी. इसी बीच पति ने गांव से बाहर जाकर मजदूरी करना भी छोड़ दिया. इसका असर यह हुआ कि घर में खाना बनाने के लिए चावल-आटे के भी लाले पड़ने लगे. बच्चे भूख से व्याकुल होते थे, लेकिन चाह कर भी कुछ नहीं कर पाती थी. कलेजा मुंह को आता था. कभी-कभी तो भूखे पेट ही सोना पड़ता था. आर्थिक स्थिति काफी खराब होने पर अब बबली भी घर से बाहर कदम निकालने को ठानी. अब बबली और उसके पति दोनों गांव में ही मजूदरी करने लगे. किसी तरह घर के परिवारों को खाना नसीब होता था. पांच साल तक बबली ने गरीबी और आर्थिक मजबूरी के साथ दिन गुजार दी. इसी बीच बबली को पता चला कि गांव में स्वयं सहायता समूह बनाने बाहर से कुछ दीदी आयी है. समूह से जुड़ने और उससे होनेवाले फायदे के बारे में बता रही है. समूह से कर्ज की बात सुन बबली भी अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत करने के उद्देश्य से स्वयं सहायता समूह से जुड़ गयी. बबली कहती हैं कि अक्तूबर 2015 में समूह से जुड़ने के बाद धीरे-धीरे हर गतिविधियों से अवगत होने लगी. अपनी छोटी-छोटी जरूरतों को पूरा करने के लिए एक से दो सौ रुपये लिया और उसे धीरे-धीरे चुकता भी किया. इसी बीच कुछ काम करने को सोची. बबली देवी ने स्वयं सहायता समूह से10 हजार रुपये ऋण लेकर एक ठेला बनवायी. ठेले पर अपने पति के साथ पकौड़ी और कचरी बेचने लगी, जिससे उसकी रोजाना सौ से डेढ़ सौ रुपये की आमदनी होने लगी. इस आमदनी से अपने घर के खर्च के साथ ऋण भी ससमय वापस करती रहीं. धीरे-धीरे बबली की आर्थिक स्थिति में सुधार होने लगा. बच्चे निजी स्कूलों में पढ़ने लगे. अब बबली अपनी आजीविका को और मजबूत करने के उद्देश्य से समूह से ऋण लेकर ठेले से होटल बनाने की जुगत में लग गयी है. अब बबली अपने परिवार के साथ खुशहाल जीवन जी रही है और इसका पूरा श्रेय स्वयं सहायता समूह को देती है. कहती हैं, एक बेरोजगार को रोजगार देकर समूह ने उसके चेहरे पर खुशियां बिखेर दी है. ❑

अपनी दुकान पर बबली देवी.